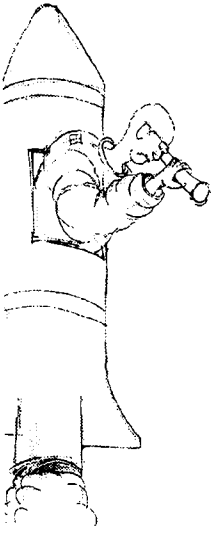

खोए हुए अंतरिक्ष यात्री

बीसवीं सदी में गणितज्ञ व तर्कवादी, मार्टिन गार्डनर के प्रयासों ने इस परंपरा की नींव रखी कि गणितीय व तार्किक पहेलियां गंभीर चिंतन और इन विषयों को सीखने-समझने का एक ज़रिया भी हो सकती हैं। इसी सिलसिले को जारी रखते हुए उन्होंने आइज़ेक एसिमोव की विज्ञान गल्प पत्रिका के प्रवेशांक में सन् 1976 में एक ऐसा स्तंभ शुरू किया जिसमें हर पहेली एक विज्ञान कथा के इर्द-गिर्द बुनी हुई थी।

उस पत्रिका में सन् 1977 और सन् 1981 के बीच प्रकाशित कुछ ऐसी ही पहेलियों को अगले कुछ अंकों में हम परोसेंगे। विज्ञान कथा पर आधारित होने के अलावा इनकी एक और विशेषता है कि हर कहानी तीन-चार हिस्सों में बंटी हुई है। किस्से का हर खंड उसे एक नई ऊंचाई तक ले जाता है और हम इन हिस्सों को इस तरह प्रस्तुत कर रहे हैं ताकि आपको प्रत्येक भाग के बारे में सोचने और उससे जूझने का पर्याप्त मौका मिले। उम्मीद है कि आप भरपूर कोशिश करने के बाद ही पन्ने पलटकर अगले खंड की तरफ बढ़ेंगे।

मार्टिन गार्डनर की विज्ञान कथा-पहेलियों के पेंगुइन द्वारा प्रकाशित संकलन 'सायंस फिक्शन पज़ल टेल्स' से साभार।

ज़रा सिर खुजलाइए

सभी चित्र: आमोद कारखानिस

इस बार की पहेली में डॉ. घोलू और उनके दो साथियों के श्वेतु ग्रह पर खो जाने का किस्सा चार हिस्सों में दिया गया है। हर हिस्से को ध्यान से पढ़िए। आगे के हिस्सों में पिछले वाले सवाल का हल और फिर उस से जुड़ा हुआ एक और सवाल दिया गया है।

भाग:1 विख्यात अंतरिक्ष भूगर्भशास्त्री डॉ घोलू, स्पति तारे के पांचवें ग्रह श्वेतु पर कदम रखने वाले पहले इंसान थे। कई महीनों तक उन्होंने और उनके दो साथियों ने अंतरिक्षयान में से उतरकर श्वेतु ग्रह के विभिन्न हिस्सों का मुआयना किया।

श्वेतु ग्रह पृथ्वी से लगभग दुगना है परन्तु वहां जीवन के आधार के लिए पर्याप्त पानी उपलब्ध नहीं है। डॉ घोलू ने पाया कि यह पूरा ग्रह ही कच्छ के रेगिस्तान की तरह ही रेतीला व बंजर है। पृथ्वी की तरह ही श्वेतु भी अपने अक्ष पर घूमता है। डॉ घोलू ने अपने यान में उपस्थित दिक्सूचक यंत्र का इस्तेमाल करते हुए इस ग्रह के एक ध्रुव को 'उत्तरी' और दूसरे को 'दक्षिणी' ध्रुव के रुप में चिन्हित कर दिया। श्वेतु के भौगोलिक व चुंबकीय ध्रुव ठीक एक-दूसरे के ऊपर स्थित हैं।

डॉ घोलू द्वारा भेजे गए अंतिम संदेश में कहा गया था "हम अपना रास्ता खो चुके हैं और अंतरिक्षयान नहीं ढूंढ पा रहे हैं। कल हम अपने कैंप से 10 किलोमीटर दक्षिण की ओर गए, फिर 10 किलोमीटर पूर्व और फिर 10 किलोमीटर उत्तर की ओर। ऐसा करने पर हमने पाया कि हम वापस अपने कैम्प पर पहुंच गए हैं। खाने की सामग्री खत्म हो चुकी है। तुरन्त मदद भेजिए।"

डॉ घोलू से संपर्क करने और उनके स्थान के बारे में जानकारी प्राप्त करने के समस्त प्रयास असफल रहे इसलिए पृथ्वी से एक सहायता यान तुरन्त रवाना कर दिया गया। दो दिन में यह सहायता यान श्वेतु के पास पहुंचकर उस ग्रह के चक्कर लगाने लग गया था। पास पहुंचते ही डॉ जोखिम सहायता यान को श्वेतु ग्रह पर उस जगह उतारने में जुट गए जो कि डॉ घोलू द्वारा भेजे गए अंतिम संदेश की शर्तों का पालन करता था।

– डॉ जोखिम श्वेतु ग्रह पर कहां उतरे होंगे?

भाग:2 देखिए पृष्ठ 26 पर।